साहित्य का इतिहास दर्शन

साहित्य का इतिहास केवल ग्रंथों का क्रम नहीं, बल्कि मानव-चेतना, समाज और संस्कृति के विकास का दर्पण है।

1 साहित्य का इतिहास : अर्थ

- **साहित्य का इतिहास** = साहित्यिक कृतियों, लेखकों, युगों और प्रवृत्तियों का क्रमबद्ध अध्ययन।
- यह मात्र तिथि-क्रम नहीं, बल्कि साहित्य के पीछे की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और वैचारिक शक्तियों की पड़ताल है।
- साहित्य के इतिहास का उद्देश्य अतीत को समझना और वर्तमान व भविष्य के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करना है।

2 साहित्य का इतिहास : प्रमुख दृष्टिकोण

(क) भारतीय दृष्टिकोण	साहित्य को जीवन, दर्शन और समाज से जोड़कर देखता है। (आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी)
(ख) पाश्चात्य दृष्टिकोण	साहित्य को रचनाकार-केंद्रित और सौंदर्यपरक रुप में देखता है। (मैथ्यू आनोल्ड, टी, एस. इलियट)
(ग) समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण	साहित्य को समाज की संरचना और वर्ग-संघर्ष से जोड़कर देखता है। (मार्क्सवादी, समाजशास्त्रीय आलोचक)
(घ) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण	साहित्य को अवचेतन मन, मनोवृत्तियों और व्यक्तित्व से जोड़ता है। (फ्रायड, युंग)
(ड़) सांस्कृतिक दृष्टिकोण	साहित्य को संस्कृति, परंपरा और मूल्य-व्यवस्था के संदर्भ में देखता है। (भारतीय सांस्कृतिक विद्वान)

3 साहित्य का इतिहास : उद्देश्य

- साहित्यिक विकास की समग्र समझ
- समाज और संस्कृति के परिवर्तन का अध्ययन
- विचारधाराओं और मानसिकता का विश्लेषण
- वर्तमान व भविष्य के लिए मार्गदर्शन

" साहित्य का इतिहास, साहित्य के माध्यम से मानव-जीवन के इतिहास को समझने की प्रक्रिया है। "

4 साहित्य का इतिहास : प्रमुख युग और उनकी विशेषताएँ

1. आहिकाल (वीरगाथा काल)

- **समय** – लगभग 1000 से 1375 ई.
- **मुख्य प्रवृत्ति** – वीर रस, राष्ट्रभावना, युद्ध, शौर्य
- **प्रमुख कृतियों** – पृथ्वीराज रासो, आल्हा-खण्ड

2. भक्तिकाल

- **समय** – लगभग 1375 से 1700 ई.
- **मुख्य प्रवृत्ति** – भक्ति (निर्गुण व सगुण), मानवता, समता
- **प्रमुख कवि** – कबीर, तुलसीदास, सूरदास, मीरा

3. रीतिकाल

- **समय** – लगभग 1700 से 1850 ई.
- **मुख्य प्रवृत्ति** – श्रृंगार रस, नाथिका भेद, अलंकारिकता
- **प्रमुख कवि** – केशवदास, बिहारी, पदमाकर

4. आधुनिक काल

- **समय** – 1850 ई. से वर्तमान
- **मुख्य प्रवृत्ति** – राष्ट्रीय चेतना, यथार्थवाद, सामाजिक सुधार, मनोवैज्ञानिकता, प्रयोगवाद, नई कविता आदि
- **प्रमुख लेखक** – भारतेंन्दु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, निराला, अज्ञेय

5 साहित्य के इतिहास से संबंधित प्रमुख विचारक और उनके योगदान

विचारक	मुख्य योगदान
आचार्य रामचंद्र शुक्ल	साहित्य को जीवन से जोड़कर देखने का दृष्टिकोण; हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास।
हजारी प्रसाद द्विवेदी	सांस्कृतिक दृष्टि, परंपरा और आधुनिकता का समन्वय।
डॉ. नागेंद्र	साहित्य का मनोवैज्ञानिक एवं सौंदर्यात्मक विश्लेषण।
नामवर सिंह	इतिहास की वैचारिकता और समकालीनता पर बल।
रामविलास शर्मा	साहित्य और समाज, भाषा व वर्ग-संघर्ष का संबंध।

6 साहित्य का इतिहास : सार

- यह साहित्यिक कृतियों की कालक्रमानुसार सूची भर नहीं, बल्कि समग्र सांस्कृतिक चेतना का इतिहास है।
- साहित्य का इतिहास समाज, संस्कृति, राजनीति और विचारधाराओं के साथ गहराई से जुड़ा होता है।
- यह हमें अतीत की विरासत समझने और भविष्य के लिए सही दिशा चुनने की प्रेरणा देता है।

" साहित्य का इतिहास = साहित्य + समाज + संस्कृति + विचार "

Adda247

हिंदी साहित्य का नामकरण

परिचय

हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों को उनकी प्रवृत्ति, प्रमुख कृतियों, विचारधारा, शैली और ऐतिहासिक-सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर विशिष्ट नाम दिए गए हैं। यह नामकरण साहित्य की प्रकृति और उसके विकासक्रम को समझने में सहायक है।

हिंदी साहित्य के प्रमुख काल और उनके नामकरण

1 आदिकाल (वीरगाथा काल)

- **नामकरण** – प्रमुखत: वीरगाथात्मक काव्य के आधार पर।
- **समय** – लगथग 1050 ई. – 1375 ई.
- **प्रमुख कृतियों** – पृथ्वीराज रासो, आल्हा-खण्ड आदि।

2 भक्तिकाल

- **नामकरण** – भक्ति-भावना और संत परम्परा के आधार पर।
- **समय** – लगथग 1375 ई. – 1700 ई.
- **प्रमुख धारा** – निर्गुण (कबीर, रैदास), सगुण (तुलसी, सूर, मीरा)।

3 रीतिकाल

- **नामकरण** – रीति (अलंकार, रस, नाथिका-भेद आदि) के आधार पर।
- **समय** – लगथग 1700 ई. – 1850 ई.
- **प्रमुख कवि** – केशवदास, बिहारी, पद्माकर, देव आदि।

4 आधुनिक काल

- **नामकरण** – आधुनिकता, नवजागरण, यथार्थ और सामाजिक चेतना के आधार पर।
- **समय** – 1850 ई. से वर्तमान तक।
- **प्रमुख चरण** – भारतेंन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगविवाद, नई कविता, समकालीन आदि।

याद रखने योग्य तथ्य

- हिंदी साहित्य का प्रथम व्यवस्थित इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल (हिंदी साहित्य का इतिहास)।
- रीतिकाल को 'श्रृंगार काल' भी कहा जाता है।
- आधुनिक काल की शुरुआत का श्रेय – भारतेंन्दु हरिश्चंद्र को।

हिंदी साहित्य का नामकरण

मुख्य बिंदु (संक्षेप में)

नामकरण के आधार

- प्रमुख प्रवृत्ति / भावधारा
- प्रमुख कृतियों
- विचारधारा
- शैली / भाषा
- ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिस्थितियों

कालानुक्रम और नाम

1. **आदिकाल** – वीरगाथा काल
2. **भक्तिकाल** – भक्ति-भावना
3. **रीतिकाल** – रीति-परक
4. **आधुनिक काल** – आधुनिकता / नवजागरण

प्रमुख धारा और कवि

- **निर्गुण भक्ति** – कबीर, रैदास
- **सगुण भक्ति** – तुलसी, सूर, मीरा
- **रीतिकाल** – बिहारी, केशवदास
- **आधुनिक** – भारतेंन्दु, प्रसाद, निराला

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

- आदिकाल = वीरगाथा
- भक्तिकाल = भक्ति
- रीतिकाल = अलंकार-रीति
- आधुनिक काल = यथार्थ, सामाजिक चेतना

स्मरणीय बातें

- हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
- रीतिकाल को 'श्रृंगार काल' कहा जाता है।
- आधुनिक काल की शुरुआत – भारतेंन्दु हरिश्चंद्र।
- हिंदी साहित्य का नामकरण, साहित्य की प्रकृति और विकास को समझने का आधार है।

साहित्य समाज का दर्पण है।

Adda247

आदिकाल (वीरगाथा काल)

वीरता, पराक्रम और राष्ट्रीय चेतना का युग

“ यह काल हिंदी साहित्य का प्रारंभिक काल माना जाता है, जिसमें वीर रस की प्रधानता है और रासों काल की परंपरा का विकास हुआ है। ”

शब्दों में शौर्य की गूंज, यही है आदिकाल की पहचान।

काल अवधि

लगभग 1050 ई. – 1375 ई.
(कुछ विद्वान 1000 – 1400 ई. तक भी मानते हैं।)

मुख्य विशेषताएँ

- ✔ वीर रस की प्रधानता
- ✔ राजा-रजवाड़ों के शौर्य, युद्ध और पराक्रम का वर्णन
- ✔ रासो काव्य की विकास परंपरा
- ✔ अपभ्रंश से विकसित प्रारंभिक हिंदी का प्रयोग
- ✔ लोक तत्वों की प्रचुरता
- ✔ श्रृंगार रस की भी उपस्थिति (कहीं-कहीं)

वीरता, संघर्ष और स्वाभिमान का साहित्य

प्रमुख संप्रदाय / प्रवृत्तियाँ

- रासो काव्य परंपरा
- वीरगाथा काव्य
- जैन, सिद्ध, नाथ और लोक साहित्य का प्रभाव

प्रमुख कवि / साहित्यकार

चंदबरदाई	जगनिक	पृथ्वीराज रासो	मालिक मोहम्मद जायसी
(पृथ्वीराज रासो)	(अल्हा-खण्ड)	(चंदबरदाई द्वारा)	(पद्मावत)
– वीरता और शौर्य का वर्णन	– अल्हा-उदल की वीरगाथा	– पृथ्वीराज चौहान का जीवन	– वीरता और प्रेम की मिश्रित शैली

प्रमुख रचनाएँ

- **पृथ्वीराज रासो** – चंदबरदाई
- **अल्हा-खण्ड** – जगनिक
- **पद्मावत** – मलिक मोहम्माद जायसी
- **हम्मीर रासो** – जैनकृत

महत्वपूर्ण तथ्य

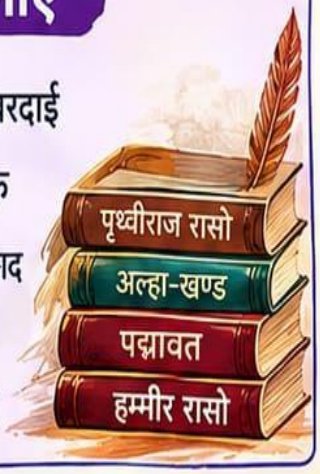

- इसी काल में अपभ्रंश का अवसान हुआ और प्रारंभिक हिंदी का विकास हुआ।
- राजपूत शासकों की वीरता और संघर्ष का वर्णन प्रमुख है।
- रासो साहित्य की परंपरा इसी काल में विकसित हुई।
- यह काल हिंदी के लिखित साहित्य का प्रारंभिक चरण माना जाता है।

आदिकाल – जब शब्द बने शस्त्र, और कविता बनी वीरों की आवाज़।

भक्तिकाल
(भक्ति आंदोलन का युग)

प्रेम, भक्ति और समरसता की अमर वाणी

सगुण और निर्गुण— दोनों धाराओं में भक्ति की गंगा बहती है।

> "इस काल में भक्ति के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग सरल और सहज बताया गया। यह काल समाज में मानवीय मूल्यों और समरसता का संदेश देता है।"

काल विभाजन

लगभग 1350 ई. – 1700 ई.
(कुछ विद्वान 1400 – 1700 ई. तक भी मानते हैं)

मुख्य विशेषताएँ

- ✔ भक्ति भावना का उत्कर्ष।
- ✔ सगुण और निर्गुण भक्ति की दो धाराएँ।
- ✔ लोकभाषा में रचनाएँ (अवधी, ब्रज, भोजपुरी, राजस्थानी आदि)।
- ✔ सामाजिक समरसता, समानता और मानवतावाद।
- ✔ कर्मकांड, जाति-पांति और बाह्याडंबर का विरोध।

भक्ति ने समाज को जोड़ा, मानव को मानव से।

प्रमुख संप्रदाय / प्रवृतियाँ

सगुण भक्ति (ईश्वर का साकार रूप)	निर्गुण भक्ति (ईश्वर निराकार)
• राम भक्ति (वैष्णव)	• ज्ञानमार्ग
• कृष्ण भक्ति (माधुर्य भाव)	• प्रेममार्ग
• शक्ति भक्ति (देवी उपासना)	• सहज मार्ग

प्रमुख संप्रदाय

- रामानंदी, वल्लभ, निर्गुणी, कबीरपंथी, दादूपंथी, सिख संप्रदाय

प्रमुख कवि / संत

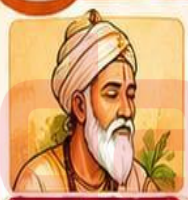

कबीरदास (निर्गुण भक्ति)
- साखी, सबद
- जाति-पांति का विरोध
- सहज भक्ति

रैदास (निर्गुण भक्ति)
- बेगमपुरा की कल्पना
- समता का संदेश

तुलसीदास (सगुण भक्ति)
- रामचरितमानस
- आदर्श जीवन का चित्रण
- भक्ति और नीति

सूरदास (सगुण भक्ति)
- कृष्ण भक्ति
- वात्सल्य और माधुर्य भाव

मीरा बाई (सगुण भक्ति)
- कृष्ण प्रेम
- वैराग्य और समर्पण

प्रमुख रचनाएँ

- कबीर – बीजक, साखी, सबद
- रैदास – पदावली
- तुलसीदास – रामचरितमानस, विनयपत्रिका
- सूरदास – सूरसागर, साहित्य लहरी
- मीरा बाई – पदावली

महत्वपूर्ण तथ्य

- भक्ति आंदोलन ने हिंदी साहित्य को लोकभाषा से जोड़ा।
- इस काल में स्त्री कवियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही (मीरा, सहजों, दयाबाई)।
- भक्ति साहित्य ने सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया।
- यह काल भारतीय संस्कृति में धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय का प्रतीक है।
- भक्ति काल ने साहित्य को जन-जन तक पहुँचाया।

"भक्ति ने भाषा को जनभाषा बनाया और साहित्य को जीवन से जोड़ा।"

रीतिकाल
(श्रृंगार और सौंदर्य का युग)
रीति, रस और अलंकार की अद्भुत छटा

"रीतिकाल में काव्य का मुख्य उद्देश्य श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति और काव्य सौंदर्य की सृष्टि है!"

काल सीमा
लगभग 1700 – 1850 ई.
(कुछ विद्वान 1650 – 1900 ई. तक भी मानते हैं)

मुख्य विशेषताएँ
- श्रृंगार रस की प्रधानता (संयोग और वियोग)
- अलंकारिकता और काव्य-लालित्य
- नायिका भेद, नायक भेद का वर्णन
- रीति ग्रंथों की रचना
- भाषा में ब्रजभाषा की प्रधानता

प्रमुख लक्षण
- काव्य में श्रृंगार की प्रधानता
- अलंकारों का भरपूर प्रयोग
- नायिका भेद, नायक भेद, रस सिद्धांत
- कविता में सौंदर्य और कलावाद
- रीति ग्रंथों की रचना

प्रमुख रचनाकार
- केशवदास (रीतिकाल के प्रमुख आचार्य)
- बिहारीलाल (सतसई)
- मतिराम
- देव
- घनानंद

प्रमुख संप्रदाय / प्रवृत्तियाँ

रीति संप्रदाय	कवि संप्रदाय	श्रृंगारिक कवि
केशवदास	बिहारी	घनानंद
चिंतामणि त्रिपाठी	मतिराम	रसेखान
भिखारीदास	देव	आलम
	पद्माकर	

प्रमुख काव्यधारा
- श्रृंगार प्रधान काव्य
- नख-शिख वर्णन
- नायिका भेद वर्णन
- अलंकारिक काव्य
- रीति ग्रंथ

"बिहारी की सतसई रीतिकाल की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है!"

प्रमुख ग्रंथ (उदाहरण)
- केशवदास – रसिकप्रिया, कविप्रिया
- बिहारीलाल – सतसई
- मतिराम – रसराज
- देव – भावविलास
- घनानंद – सुजानहित

रीतिकाल की प्रमुख काव्य विशेषताएँ
- श्रृंगार रस का उत्कर्ष
- अलंकारों की बहुलता
- भाषा की कोमलता और माधुर्य
- नायिका भेद और नायक भेद का वर्णन
- काव्य में कलात्मकता और सौंदर्य-बोध

रीतिकाल का महत्व
- हिंदी काव्य में श्रृंगारिक सौंदर्य की परंपरा को समृद्ध किया।
- अलंकार शास्त्र और काव्य शास्त्र को विकसित किया।
- भाषा और साहित्य को कलात्मक ऊँचाई प्रदान की।
- रीतिकालीन काव्य आज भी अपनी सुकुमारता और सौंदर्य के कारण लोकप्रिय है।

"रीतिकाल हिंदी साहित्य का वह स्वर्णिम अध्याय है, जहाँ शब्दों में श्रृंगार है, भावों में सौंदर्य है और अलंकारों में कला है!"

रीतिकाल – शब्दों में श्रृंगार, भावों में संसार

"आधुनिक काल ने साहित्य को समाज की चेतना से जोड़ा और उसे जन-जीवन की आवाज़ बनाया।"

आधुनिक काल
(जागरण, यथार्थ और नवचेतना का युग)
समाज, राष्ट्र और व्यक्ति की नई चेतना

काल सीमा
लगभग 1850 – 1947 ई.
(कुछ विद्वान 1900 – 1950 ई. तक भी मानते हैं)

मुख्य विशेषताएँ
- पश्चिमी विचारधारा, विज्ञान और आधुनिक शिक्षा का प्रभाव।
- सामाजिक सुधार, स्त्री-शिक्षा, जातीय भेदभाव के विरुद्ध आवाज़।
- राष्ट्रवाद, स्वाधीनता आंदोलन और जन-जागरण की चेतना।
- गद्य साहित्य का व्यापक विकास – निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक।
- व्यक्ति-चेतना, यथार्थवाद और समाज-सापेक्ष दृष्टि का उदय।

आधुनिक काल ने साहित्य को जीवन से जोड़ा, और जीवन को साहित्य बना दिया!

प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- राष्ट्रवाद
- सामाजिक सुधारवाद
- यथार्थवाद
- प्रेमवाद
- छायावाद
- प्रगतिवाद
- नई कविता / नई कहानी

प्रमुख कालखंड / घटनाएँ
- भारतेन्दु युग (1850 – 1900)
- द्विवेदी युग (1900 – 1920)
- छायावाद (1920 – 1936)
- प्रगतिवाद (1936 – 1950)

प्रमुख साहित्यकार

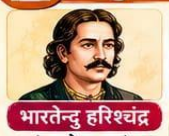

भारतेन्दु हरिश्चंद्र (भारतेन्दु युग)
- नवजागरण
- आधुनिक हिंदी के जनक

महावीर प्रसाद द्विवेदी (द्विवेदी युग)
- भाषा शुद्धि
- गद्य विकास
- सामाजिक चेतना

जयशंकर प्रसाद (छायावाद)
- रचनात्मकता
- सौंदर्यबोध
- इतिहास चेतना

सुमित्रानंदन पंत (छायावाद)
- प्रकृति प्रेम
- मानवीय संवेदना
- सौंदर्य

प्रेमचंद (यथार्थवाद)
- किसान जीवन
- सामाजिक यथार्थ
- जन-साहित्य

नागार्जुन (प्रगतिवाद)
- जनपक्षधरता
- संघर्ष चेतना
- लोकजीवन

अज्ञेय (नई कविता)
- व्यक्ति चेतना
- आधुनिक बोध
- प्रयोगवाद

प्रमुख साहित्यिक विधाएँ
- **काव्य** – छायावाद, प्रगतिवाद, नई कविता
- **कहानी** – यथार्थवादी, मनोवैज्ञानिक
- **उपन्यास** – सामाजिक, ऐतिहासिक
- **नाटक** – सामाजिक, ऐतिहासिक, एकांकी
- **निबंध** – विचारात्मक, सामाजिक, साहित्यिक
- **आलोचना** – आधुनिक आलोचना

महत्वपूर्ण तथ्य
- इस काल में हिंदी साहित्य में 'आधुनिक चेतना' का उदय हुआ।
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक माना जाता है।
- द्विवेदी युग को हिंदी गद्य का स्वर्ण युग भी कहा जाता है।
- प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास और कहानी को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा।
- छायावाद ने हिंदी कविता को भावुकता और आत्मानुभूति का स्वर दिया।

"आधुनिक काल में साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम बना।"

आधुनिक काल – जागरूक समाज, संवेदनशील साहित्य, और नई दिशा का युग